हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-६ अङ्क-९ अप्रैल, २०१०

सम्पादकीय

गणगौर, बैसाखी त्योहार तथा ऐन्ज़ाक-दिवस

इस महीने, दो प्रमुख भारतीय त्योहार, गणगौर तथा बैसाखी (वैसाखी) मनाए जायेंगे। गणगौर का त्योहार, राजस्थान का प्रमुख त्योहार है जो होली के दूसरे दिन से आरम्भ होता है और अगले दो सप्ताहों तक चलता है। इस त्योहार पर कुँआरी लड़कियाँ अपनी पसंद का पति प्राप्त करने के लिये और विवाहित महिलायें अपने पति की दीर्घ आयु के लिये गण (शिव) तथा गौरी (पार्वती) की पूजा करती हैं। त्योहार के अंतिम दिन, गौरी की विदाई के गीत गाये जाते हैं और सजे हुए ऊँटों, बैलगाड़ियों, हाथियों के साथ गौरी की प्रतिमाओं का जुलूस निकाला जाता है और अंत में, ये प्रतिमाएँ जल में विसर्जित की जाती हैं।

बैसाखी का त्योहार, पंजाब का प्रमुख त्योहार है और हर वर्ष, वैसाख के पहले दिन (सामान्यतया, १३ अप्रैल) को रबी फ़सल की समाप्ति पर हर्ष और उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह दिन, गुरु गोविन्द सिंह ने जिस प्रकार १६९९ में, आनंदपुर के पास केशगढ़ साहिब में 'खालसा-पंथ' की नींव डाली थी और सिक्खों के पाँच नेताओं (पंज पियारे) को चुना था, उस दिन की याद में भी मनाया जाता है। मेल्बर्न में भी ये दोनों त्योहार धूम-धाम से मनाये जा रहे हैं। इन दो भारतीय त्योहारों के अतिरिक्त, सदा की भाँति २५ अप्रैल को, ऑस्ट्रेलिया के हर शहर और गाँव में ऐन्ज़ाक-दिवस (शहीद-दिवस) मनाया जायेगा, जिस के बारे में 'हिंदी-पुष्प' के पिछले वर्ष के अप्रैल अंक में जानकारी दी जा चुकी है। सभी पाठकों को, जो उपरोक्त त्योहार मनाते हैं, इन त्योहारों की शुभकामनाएँ।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में विविध विषयों पर कुछ रोचक कविताएँ हैं। इसके अतिरिक्त २००९ में वी०सी०ई हिन्दी परीक्षा में तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा के अनुभवों के बारे में एक लेख है। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा "सूचनाएँ" स्तम्भ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजे -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट मे रचनाएँ भेजे तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखे।

काव्य-कुंज

सत्यार्थी

- हेमानी किरण, मेल्बर्न

बोझिल मन को
आकांक्षाओं से जो मुक्त कर दे
गंगा सा मुझ को
शांत, निर्मल कर दे,
भाव बन कर चारों ओर फैल जाऊँ मैं
आकाश सा मेरा विस्तार कर दे,
धर्म, लिंग-भेद,
समाज की मरीचिका को आलोप
मुझे मनुष्य, केवल मनुष्य कर दे,
उस सत्य,
मेरे अंतइ-प्रभु, मुझे
मेरी आत्मा से मिला दो।

प्रवासी बूढ़े माता-पिता

-राजेन्द्र चोपड़ा, मेल्बर्न

बूढ़े माता-पिता,
बहू-बेटे के कहने पर
दूर देश में आन बसे हैं
सब बेच कर
दिन भर खाना बनाते
और बच्चों को देखते हैं

शाम को गुम-सुम अकेले
बंद कमरे के अंदर
कहते हैं शुक्र है,
संतान आँखों के सामने तो है
बस दिन काट रहे हैं,
यही सोच-सोच कर

सुबह काम पर जाते समय
बहू और बेटा हम से कहते हैं-
दिन में प्लाज़ा घूम आया करें
एक तो बिजली
और पानी का खर्च बचेगा
दूसरा आप का टहलना हो जाएगा
रात का खाना भी तो बनाना होता है
इस लिए घर जल्दी लौट आया करें

करते हैं दावा
वे बहुत ध्यान रखते हैं हमारा
मज़े से खाते हैं
माँ के हाथों का पका खाना सारा
हिदायत है हम माँ-बाप को
कम खाओ जल्दी सो जाओ
रात को जल्दी सोने और
सुबह देर से जगने से
नहीं मिलता उनको
हमारे पास रहने का सहारा
हमारे आने पर बढ़े हैं खर्चे
करते रहते हैं इशारा

सप्ताहांत में दो दिन की छुट्टी
होती है सब की
बच्चों का आदेश है,
हमें भी बाहर घूमना चाहिए
ऐसा सुनते ही हम भूल जाते हैं
अपने ग़म को
परंतु तुरंत कहते हैं
मंदिर, गुरुद्वारे हो आया करें
सुंदर सतसंग-कीर्तन और
मुफ़्त लंगर भी होता है
स्वयं खाकर हमारे लिए
बाँध कर ले आया करें

बच्चे हमारा आदर करने का
ज़िक्र करते हैं हर पहर
इसी लिए ही तो अपने पास
बुला लिया है
हमने भी उनको
अपने 'प्रॉवीडेंट' के पैसों से
अत्यंत सुंदर
एक बड़ा मकान दिलवा दिया है
हम खूब आराम से गैराज में रहते हैं
सच मानों राजन -
हमारे दिल के टुकड़ों ने
एक टुकड़ा मकान का
किराए पर चढ़ा दिया है।

मौत उस युवा की!*

- पराशर गौर, कनाडा

(यह कविता आज के उन नव-युवाओं पर लिखी गई है जो मानसिक दबाव के कारण अपनी जीवन-लीला समाप्त करने को बाध्य हो जाते हैं।)

एक तरुण ने
यौवन की दहलीज पर
अपने पाँव ही रखे थे कि
मौत उसे निगल गई!

पंखे से झूलती उसकी लाश
मौन हो कर
उसके ऊपर हुए अत्याचारों का
सबूत दे रही थी!

उसका वह मुरझाया चेहरा
उसकी वह लटकी गर्दन
कह रही थी..........
तुम सब ने मिल कर मुझे मारा है।

मुझे मारा है.....
मेरे स्कूल के माहौल ने
मेरे माता-पिता की महत्वाकांक्षाओं ने
जो बार-बार मुझ पर लादी जाती रही हैं
बिना मेरी भावनाओं को समझे!

मुझे मारा है.....
मेरे सीनियरों के घमंड ने
जो सरे आम मुझे
हँसी का पात्र बना कर
बार-बार मुझे लज्जित करते रहे
सब के सामने!

मैं मरना नहीं चाहता था
परंतु मेरे पास.....
इसके सिवा कोई विकल्प भी नहीं था।

एक विकल्प था - विद्रोह का
किस-किस से विद्रोह करता?
सब के सब तो
अपने-अपने चक्रव्यूह में मुझे
फँसाते जा रहे थे....
जिस से बाहर निकलना
मेरे लिये नामुमकिन सा था!

मुझे मारा है.....
मेरे अंदर के झुकते 'मैं' ने
जो लड़ते-लड़ते हार गया था
अपने आप से!

मैं मर गया हूँ तो क्या
जीने की लालसा और
उम्मीदों की किरण
अभी भी शेष है.....

जब तुम सब लोग
मेरी भावनाओं को समझ पाओगे
तब........
तब कोई नहीं मेरी तरह मरेगा
वह.......
जियेगा एक सुनहरे भविष्य के लिये!

www.scansoft.com

वी०सी०ई० हिन्दी के मेरे अनुभव (भाग ३)

(पिछले अङ्कों में आप वर्ष २००९ की वी०सी०ई हिन्दी की परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले दो विद्यार्थियों के अनुभव पढ़ चुके हैं। लीजिये अब प्रस्तुत हैं, इसी परीक्षा में तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा के अनुभव। यह लेख, इस शृंखला की अंतिम कड़ी है- सम्पादक)

-जूही पिपरैया,
वीइ एसइ एलइ का ग्लेन वेवर्ली केन्द्र, विक्टोरिया

जब मैं चार वर्ष पूर्व भारत से आस्ट्रेलिया सपरिवार देशांतरित हुई थी, तो अधिकांश अप्रवासियों की तरह मैं भी अति उत्साहित थी। परंतु यह भय भी था कि मैं इस अनजान जगह पर पूर्ण रूप से समायोजित होने में समर्थ होऊँगी या नहीं, अच्छे मित्रों से मित्रता करने में सक्षम हो पाऊँगी या नहीं। कुछ अंतराल के पश्चात् मेरा दाखिला ग्लेन वेवर्ली महाविद्यालय में हो गया। वहाँ मुझे अन्य छात्र-छात्राओं की मित्रता का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे सभी अति सहायक, परिपक्व व गुणवान व्यक्ति थे किंतु इसके पश्चात् भी मन में एक अधूरापन था। अभाव था मेरे भारतीय मित्रों का, जिनसे मैं बेझिझक अपने मन की बात अपनी मातृभाषा में कर सकती थी। कहते हैं सच्चे दिल से माँगो, तो भगवान भी मिल जाते हैं। लगता है मेरे मन की अभिलाषा भी ईश्वर ने सुन ली।

मुझे मेरी भारतीय सहेलियों से यह सूचना प्राप्त हुई कि हम हिंदी भाषा का अध्ययन एक विषय के रूप में कर सकते हैं। यह कक्षाएँ विक्टोरियन स्कूल आफ़ लैंग्वेजेज़ (वी०एस०एल०) द्वारा संचालित होती हैं । सौभाग्यवश, मुझे यह भी पता चला कि यह कक्षाएँ मेरे ही विद्यालय में मंगलवार की शाम को ४ से ७ बजे तक लगती हैं । मैंने हिन्दी को अपने वी०सी०ई० के विषय के रूप में अध्ययन करने का संकल्प कर ग्यारहवीं कक्षा में दाखिला लिया। हिन्दी की कक्षा में प्रथम कदम रखते ही मुझे यह आभास हुआ कि इस में भाग लेना, मेरे जीवन के सर्वश्रेष्ठ निर्णयों में से एक था।

वस्तुत: हिन्दी कक्षा में विभिन्न प्रकार के हिन्दी भाषी विद्यार्थी थे। कुछ व्यक्ति आस्ट्रेलिया में जन्मे थे तो कुछ चन्द मास पूर्व ही भारत से आये थे। कुछ विद्यार्थियों की हिन्दी में सुधार की आवश्यक्ता थी तो कई अत्यधिक ज्ञानी व निपुण थे। परंतु हम सभी हिन्दी में अधिक योग्य बनने की अभिलाषा रखते थे और एक दूसरे की सदैव सहायता करने के लिए तत्पर रहते थे तथा एक दूसरे को सम्मान की नज़र से देखते थे। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लाभ तो यह था कि मन में जो भारत से विरह होने का भाव था, वह हिन्दी कक्षा में आकर क्षीण होता चला गया। अपनी मातृभाषा में विचार विमर्श करने से व अन्य हिन्दी भाषियों से हिन्दी में वार्तालाप करने से मन उल्लासमय हो जाता था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे हम अपने देश की भूमि पर आ गए हैं। आस्ट्रेलिया में निवास करने के पश्चात् भी भारतीय समाज, सभ्यता, व संस्कृति का नित्य प्रतिदिन अनुभव होने लगा। नए भारतीय मित्रों के संग भारतीय चलचित्र देखना, हिन्दी रेडियो का श्रवण करना, भारतीय त्योहारों की स्मृति ताज़ा रखना, भारतीय संगीत व नृत्य कार्यक्रम का आनंद लेना हमारे जीवन का अभिन्न भाग बन गया। इसी प्रकार अनेक रोचक विषयों, उदाहरण के लिये 'यात्रा', 'अप्रवजन', 'विवाह', नारी एवं समाज', आदि पर विचार-विमर्श करते हुए दो वर्ष कैसे व्यतीत हो गए, इसका आभास ही न हुआ। हिंदी कक्षा ने मुझे मेरी संस्कृति व सभ्यता से जोड़े रखा और मेरे सांस्कृतिक परिवेश तथा मान्यताओं को अधिक प्रगाढ़ बनाने में सहायता भी की। साथ ही साथ मैंने हिन्दी भाषा का उचित उपयोग सीखा, विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया तथा कई घनिष्ठ मित्र भी बनाए। मैं सर्वप्रथम अपनी सफलता का श्रेय अपनी हिन्दी की अध्यापिका श्रीमती ठेठी को प्रदान करूंगी जो हम सभी विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत रही हैं। श्रीमती ठेठी के अदम्य प्रयास, दृढ़-निश्चय, कठोर परिश्रम व सहायता के बिना यह सफ़र इतना आनंददायक न होता।

वी०सी०ई० हिन्दी में ४०/५० या अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार

विक्टोरियन स्कूल आफ़ लैंग्वेजेज़ की ओर से सभी भाषाओं में ४०/५० से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को एक विशेष समारोह में पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर लिया गया एक चित्र प्रस्तुत है

बाएँ से दाएँ- वी०एस०एल के प्रधानाध्यापक, फ़्रैंक मरलीनो, श्रीमती मंजीत ठेठी (हिन्दी शिक्षिका तथा संयोजिका), अमरप्रीत कौर, केतन मिश्र व जुही पिपरैया

२००९ की वी०सी०ई हिन्दी की परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को बधाई

निम्नलिखित विद्यार्थियों को २००९ की वी०सी०ई हिन्दी की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये हिन्दी-पुष्प की ओर से बहुत-बहुत बधाई -

ब्लैकबर्न केन्द्र - ईशा कालिया, अमरप्रीत कौर, स्टेसी ऐन लुइस, केतन मिश्र, अपूर्वा शिशिर नारगांवकर, अजय पाल, पार्थ पांडे, रोहित सत्यजीत राजूरकार, उपग्ना मुकेशकुमार राना, सुखपाल सिंह राठौर, सिद्धार्थ देवांग शेठ, श्रेय सिंह।

ग्लेन वेवर्ली केन्द्र - जूही पिपरैया, सान्या सिंह, चरण आहुजा, अपेक्षा रमेश चडागा, शर्मीला अतमेरकर, सरीन स्टैनले।

डैन्डेनांग केन्द्र - चैतन्या टुटेजा, सवीना सैनी, अरुण सिंह, सुशांत गुप्ता, जितिन राज, लीडिया लाज़र, अमित कुमार शर्मा, अंजलि जोस।

शोक-समाचार

भारत के भूतपूर्व 'काउँसल-जनरल', श्री प्रकाश गोविल की धर्मपत्नी, श्रीमती चन्द्रा गोविल का १४ अप्रैल को देहांत हो गया। हिन्दी-पुष्प की ओर से हम श्री प्रकाश गोविल तथा उनके परिवार के लिये संवेदना प्रकट करते हैं और ईश्वर से श्रीमती गोविल की आत्मा की शांति के लिये प्रार्थना करते हैं।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

मूर्ख-दिवस (१ अप्रैल), गुड-फ़्राइडे (२ अप्रैल), ईस्टर संडे (४ अप्रैल), बैसाखी/वैसाखी (१३ अप्रैल), ऐन्ज़ाक-दिवस (२५ अप्रैल), १ मई (अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस), ९ मई (मातृ-दिवस), २७ मई (बुद्ध-पूर्णिमा)।

सूचनाएँ

१. भारत में होने वाले आगामी राष्ट्रमण्डल (कॉमनवेल्थ) खेलों के लिये मेल्बर्न में उत्सव
तिथि - मंगलवार, २० अप्रैल २०१०
कार्यक्रम - सुबह १० बजे से १२ बजे तक विक्टोरियन इंस्टीट्यूट आफ़ स्पोर्टस के प्रांगण में सार्वजनिक रूप से राष्ट्रमण्डल की अध्यक्ष, महारानी एलिज़ाबेथ के संदेश तथा संदेश-वाहकों का स्वागत और स्कूलों तथा खिलाड़ियों के लिये कार्यक्रम। १२ बजे दोपहर से फ़ेडरेशन स्क्वायर में सार्वजनिक समारोह और भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम जिस में बॉलीवुड नृत्य भी सम्मिलित होंगे। अधिक जानकारी के लिये, मेल्बर्न नगर के मीडिया एडवाइज़र, श्री एबोनी ईटन से ९६५८ ९४७५ अथवा (०४३८) ७२४ ०४८ पर सम्पर्क कीजिये।

२. साहित्य-संध्या - अपने लोग, अपनी बातें (शनिवार, २४ अप्रैल)
स्थान - फ़िलिस होर रूम, क्यू सिटी लाइब्रेरी, कोथम रोड और सिविक ड्राइव के नुक्कड़ पर क्यू-३१०१ (मेलवे संदर्भ ४५ डी-६)
समय - रात के ७.३० बजे से १०.३० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिये - नलिन शारदा (०४०२)१०८५१२
पिछली साहित्य-संध्या की बैठकों में ली गई फोटुओं तथा 'हिन्दी-पुष्प' के पुराने अंकों के लिये,
निम्नलिखित वेबसाइट देखिये - http://sahityasangam .weebly.com/index.html

३. उड़ीसा से आई हुई ओडिसी नृत्य-विशेषज्ञ, 'मसाको ओनो' का नृत्य (शनिवार, २४ अप्रैल)
स्थान -डा० चंद्रभानु का हंसविहार स्टूडियो, लेविल १/१०, स्वान स्ट्रीट, रिचमंड
समय - रात के ७.३० बजे से प्रारम्भ
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिये अलफ़ान्सो बेन्वायट (०३) ९८५७ ६२११। इस कार्यक्रम से उपार्जित धनराशि, असोसिएशन फ़ार इण्डियाज़ डेवलपमेंट के लिये उपयोग की जायेगी।

६. मेल्बर्न के उत्तरी क्षेत्र के वरिष्ठ भारतीयों के संगठन **एन०आर०आई०एस०ए० की मासिक बैठक**
तिथि तथा समय - रविवार, २५ अप्रैल, सुबह ११ बजे।
स्थान - १८ बेन्ट स्ट्रीट, नार्थकोट
अधिक जानकारी के डा० संतोष कुमार को (०४११) १३६ ६१२ अथवा राजेन्द्र चोपड़ा को (०४०१) ६८१ ३३० पर फ़ोन कीजिए।

अब हँसने की बारी है

१. कबाड़ी

कबाड़ी (एक महिला से) - बहन जी, घर में बेकार फ़ालतू सामान हो तो दे दीजिये।
महिला (कबाड़ी से) - तुम ग़लत समय पर आये हो, मेरे पति अभी बाहर गये हुए हैं।

२. खिड़की नहीं खुल रही है

पति (होटल मैनेजर से) - मेरी पत्नी खिड़की से बाहर कूद कर आत्म-हत्या करना चाहती है, मेरी मदद कीजिये।
होटल मैनेजर - इस में मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ?
पति (होटल मैनेजर से) - कमरे की खिड़की नहीं खुल रही है, आप खिड़की खुलवा सकते हैं।

३. मैं इस शहर में नया हूँ

एक शराबी ने दूसरे शराबी से पूछा - आकाश में यह सूरज दिख रहा है या चाँद?
दूसरे शराबी ने जवाब दिया - "मुझे क्या पता, मैं इस शहर में नया हूँ"।